Minor Research Project:

" Dr. Parshuram Shukla ke Suchnatmak Bal Sahitya ka Adhyayan"

"डॉ. परशुराम शुक्ल के सूचनात्मक बाल साहित्य का अध्ययन"

(Objective, Achievements, Summary of the Findings & Contribution to the Society)

➢ Objective of the Project:

1. हिंदी साहित्य की विकासयात्रा में 'बाल साहित्य' को स्वतंत्र विधा के रूप में पहचान बनाने के लिए क्या संघर्ष करना पड़ा, इसको तलाशना।
2. हिंदी बाल साहित्य में 'सूचनात्मक बाल साहित्य' का अविर्भाव कब और कैसे हुआ इसे तलाशना।
3. हिंदी में सूचनात्मक बाल साहित्य के सूत्रधार डॉ. परशुराम शुक्ल एवं उनके सूचनात्मक बाल साहित्य से परिचित करवाना।
4. डॉ. परशुराम शुक्ल के सूचनात्मक बाल साहित्य का यथार्थ ज्ञान के स्तर पर परीक्षण करना।
5. बच्चों के बौद्धिक विकास और यथार्थ ज्ञान दिलाने में डॉ. परशुराम शुक्ल का सूचनात्मक बाल साहित्य कहाँ तक कारगर हैं, इसे तलाशना।

➢ Whether objectives were achieved:

प्रथम अध्याय में हिंदी बाल साहित्य का विकास यात्रा का विवेचन किया है। इसमें बाल साहित्य की परिभाषा और स्वरूप का विश्लेषण किया है। बाल साहित्य के इतिहास के अंतर्गत विभिन्न कालों में का परिचय दिया गया है। इसमें भारतेंदु युग (1850-1900), पूर्व स्वतंत्रता युग (1901 से 1947), उत्तर स्वतंत्रता युग (1948 से 1990) और प्रयोगवादी युग (1990 से आज तक) कालों में हुए बाल साहित्य का विकास का विवेचन किया। साथ ही उपरोक्त कालों में प्रतिनिधि बाल साहित्यकारों का संक्षिप्त परिचय देते हुए बाल साहित्य की दशा और दिशा को स्पष्ट किया है।

द्वितीय अध्याय 'डॉ. परशुराम शुक्ल के रचनात्मक चेतना का विकास' में डॉ. परशुराम शुक्ल के व्यक्तित्व एवं उनके कृतित्व पर प्रकाश डाला गया है। प्रस्तुत अध्याय में उनका जन्म, शिक्षा, नौकरी, परिवार, विवाह, संतानें, वेशभूषा, व्यक्तित्व आदि की जानकारी दी गई है। बाल साहित्यकार के रूप में डॉ. परशुराम शुक्ल द्वारा लिखित बाल कहानी संग्रह, बाल/ किशोर उपन्यास, बाल कविताएँ, किशोर साहित्य, सूचनात्मक बाल/किशोर साहित्य, विभिन्न सूचनात्मक कोश, सामाजिक विषयों पर आलेख, पुरस्कार आदि का संक्षिप्त विवेचन किया है।

तृतीय अध्याय 'सूचनात्मक बाल साहित्य का स्वरूप और उपयोगिता' में सूचनात्मक बाल साहित्य का अर्थ, परिभाषा और उसके स्वरूप का विवेचन किया गया है। साथ ही सूचनात्मक बाल साहित्य की विशेषताओं पर प्रकाश डाला गया है। डॉ. परशुराम शुक्ल के सूचनात्मक बाल साहित्य का संक्षिप्त परिचय देते हुए उनका सूचीबद्ध विवरण भी प्रस्तुत किया है। अध्याय के दूसरे चरण में सूचनात्मक बाल साहित्य की उपयोगिता का विवेचन किया है। इसमें सूचनात्मक बाल साहित्य बच्चों और बड़ों को भी यथार्थ तथ्यों से परिचित कराता है। बच्चों में भ्रामक धारणाएँ निर्माण नहीं होती और उनमें वैज्ञानिक दृष्टि निर्माण होती है। बच्चों के सामान्य ज्ञान का विकास होता है। बच्चों के व्यक्तित्व का संतुलित विकास होता है। इससे बाल साहित्य विषयों की विविधता और विस्तार को बढ़ावा मिलता है। सूचनात्मक साहित्य के जरिए बच्चों पर भाषिक संस्कारों के साथ-साथ भाषिक संपन्नता में भी वृद्धि होती है।

चतुर्थ अध्याय 'डॉ. परशुराम शुक्ल के सूचनात्मक बाल साहित्य का मूल्यांकन' में विभिन्न बिंदुओं के आधार पर डॉ. शुक्ल के सूचनात्मक बाल साहित्य का मूल्यांकन किया है। इसमें बौद्धिकता की दृष्टि से, ज्ञान-विज्ञान की दृष्टि से, प्राकृतिक ज्ञान की दृष्टि से, पेड़-पौधों, जलचर वन्यजीव, थलचर वन्यजीव, नभचर वन्यजीव और उभयचर वन्यजीवों के प्राकृतिक परिवेश की दृष्टि से मूल्यांकन करके निष्कर्ष प्रस्तुत किए हैं। साथ ही शिक्षा की दृष्टि से, राष्ट्रपुरुषों के विचारों की दृष्टि से और राष्ट्रीय, विश्व दिवस और पर्वों की दृष्टि से भी डॉ. शुक्ल के सुचनात्मक बाल साहित्य का मूल्यांकन किया गया है।

पंचम अध्याय के अंतर्गत उपरोक्त चारों अध्यायों से प्राप्त निष्कर्षों को सार रूप में प्रस्तुत किया है। अंत में प्रस्तुत लघु शोध योजना की प्रमुख उपलब्धियों को दर्ज कराया गया है।

➢ Achievements from the Project:

हिंदी बाल साहित्य में डॉ. परशुराम शुक्ल एक मेधावी और प्रतिभाशाली साहित्यकार है। हिंदी साहित्य जगत में 'बाल साहित्य' को स्वतंत्र विधा स्थापित होने के लिए संघर्ष करना पड़ा है। बाल साहित्य और बाल साहित्यकारों को हमेशा असुविधाओं और उपेक्षाओं को सहना पड़ा है। लेकिन डॉ. शुक्ल ने बच्चों में जागरूकता एवं सामाजिक चेतना को उत्पन्न करना अपने साहित्य का उद्देश्य माना। सूचनात्मक बाल साहित्य वर्तमान समय में खूब चर्चित बाल साहित्य विधा बना है। उसके विभिन्न लाभों से अब सभी परिचित हो रहे हैं। दिन-ब-दिन बढ़ती उपयोगिता के कारण चिल्ड्रन्स बुक ट्रस्ट ऑफ इंडिया जैसी विख्यात संस्था ने सूचनात्मक बाल साहित्य को एक स्वतंत्र विधा का दर्जा दिया है। सूचनात्मक बाल साहित्य बच्चों और बड़ों को भी यथार्थ तथ्यों से परिचित कराता है।

Scanned by CamScanner

बच्चों में भ्रामक धारणाएँ निर्माण नहीं होती और उनमें वैज्ञानिक दृष्टि निर्माण होती है। बच्चों के सामान्य ज्ञान का विकास होता है। बच्चों के व्यक्तित्व का संतुलित विकास होता है। इससे बाल साहित्य विषयों की विविधता और विस्तार को बढ़ावा मिलता है। सूचनात्मक साहित्य के जरिए बच्चों पर भाषिक संस्कारों के साथ भाषिक संपन्नता में भी वृद्धि होती है। कुल मिलाकर देखा जाए तो सूचनात्मक बाल साहित्य अपने उपयोगिता के कारण वर्तमान समय में एक चर्चित विधा बन चुका है।

➢ **Summary of the Findings:**

हिंदी हमारा बाल साहित्य सकारात्मक सोच के साथ सृजनशील होना चाहिए। इससे बालकों का स्वस्थ मनोरंजन हो, उनका बचपन उल्लास और उमंगों के साथ बीते तथा वे सुनागरिक बनें। तभी हम अपने दायित्व का निर्वहन कर पाएँगे। बाल पाठकों की समस्या का समाधान बाल साहित्यकार शिक्षक अभिभावक प्रकाशक मिलकर कर सकते हैं। वे उन्हें स्वस्थ सुरुचिपूर्ण श्रेष्ठ बालसाहित्य उपलब्ध कराने में महत्त्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं। हिंदी बाल साहित्य में डॉ. परशुराम शुक्ल एक मेधावी और प्रतिभाशाली साहित्यिकार है। हिंदी साहित्य जगत में 'बाल साहित्य' को स्वतंत्र विधा स्थापित होने के लिए संघर्ष करना पड़ा है। बाल साहित्य और बाल साहित्यकारों को हमेशा असुविधाओं और उपेक्षाओं को सहना पड़ा है। लेकिन डॉ. शुक्ल ने बच्चों में जागरूकता एवं सामाजिक चेतना को उत्पन्न करना अपने साहित्य का उद्देश्य माना। डॉ. शुक्ल ने विभिन्न क्षेत्रों की यथार्थ तथ्यपरक एवं वस्तुनिष्ठ जानकारी सूचनात्मक बाल साहित्य का विषय बनी है। हिंदी बाल साहित्य में 'सूचनात्मक बाल साहित्य' विधा की एक नई शाखा है। 1990 ई. के बाद हिंदी बाल साहित्य में प्रयोगवादी युग का जन्म हुआ जिसमें डॉ. परशुराम शुक्ल ने हिंदी बाल साहित्य को सूचनात्मक बाल साहित्य से जोड़ने का कार्य किया। इस कारण डॉ. परशुराम शुक्ल को सूचनात्मक बाल साहित्य का सूत्रधार माना जाता है।

डॉ. परशुराम शुक्ल ने सूचनात्मक बाल साहित्य पर अनेक किताबों का सृजन किया है। उन्हें सूचनात्मक बाल साहित्य का जनक कहा जाता है। उनके सूचनात्मक बाल साहित्य का सही ढंग से विवेचन एवं विश्लेषण करना जरूरी है। उन्होंने कविता, गद्य, कोश आदि विधाओं में सूचनात्मक बाल साहित्य लिखा है। सूचनात्मक बाल साहित्य बच्चों और बड़ों को भी यथार्थ तथ्यों से परिचित कराता है। बच्चों में भ्रामक धारणाएँ निर्माण नहीं होती और उनमें वैज्ञानिक दृष्टि निर्माण होती है। बच्चों के सामान्य ज्ञान का विकास होता है। बच्चों के व्यक्तित्व का संतुलित विकास होता है। इससे बाल साहित्य विषयों की विविधता और विस्तार को बढ़ावा मिलता है। सूचनात्मक साहित्य के जरिए बच्चों पर भाषिक संस्कारों के साथ भाषिक संपन्नता में भी वृद्धि होती है। डॉ. शुक्ल का सूचनात्मक बाल साहित्य ज्ञान-विज्ञान की दृष्टि से बौद्धिक विकास करने, प्राकृतिक परिवेश की यथार्थ परक जानकारी लेने, शैक्षिक मूल्यों को समझने, राष्ट्रीय आदर्शों के विचारों की मौलिकता को समझने और राष्ट्रीय पर्वों एवं दिवस के मूल्य को समझने की दृष्टि से अमूल्य है। कुल मिलाकर देखा जाए तो सूचनात्मक बाल साहित्य अपने उपयोगिता के कारण वर्तमान समय एक चर्चित विधा बन चुका है।

➢ **Contribution to the Society:**

सदृढ समाज निर्माण के लिए वहाँ का नागरिक बौद्धिक एवं शारीरिक दृष्टि से सक्षम होना चाहिए। यह प्रक्रिया व्यक्ति की बालआयु से हो तो आगे जाकर वह एक सक्षम नागरिक बन सकता है। इसके लिए बच्चों को बाल साहित्य से रूबरू करना जरूरी होता है। इस दिशा में सूचनात्मक बाल साहित्य का योगदान महत्त्वपूर्ण रहेगा। सूचनात्मक बाल साहित्य के व्यक्तित्व के संतुलन विकास में सहयोग प्रदान करता है। बच्चों में सामान्य ज्ञान का विकास करता है एवं उनमें वैज्ञानिक दृष्टिकोण उत्पन्न करता है। इन दोनों की वर्तमान में बड़ी आवश्यकता है। इसके साथ ही सूचनात्मक साहित्य भाषा को समृद्ध बनाता है। सूचनात्मक बाल साहित्य विभिन्न प्रकार के आडम्बरों को समझने में सहयोग करके बच्चों को वास्तविक और आधुनिक सोच प्रदान करता है। सूचनात्मक बाल साहित्य का आधार यथार्थ पर आधारित तथ्य और जानकारियों तथा विज्ञान है। सूचनात्मक बाल साहित्य में प्रामाणिकता का गुण होता है। बाल साहित्य में कल्पना का विशेष महत्त्व है। इसका प्रमुख कारण उद्देश्य है। बाल साहित्य का प्राणतत्व मनोरंजन है। बच्चों के चारित्रिक विकास और ज्ञानवर्धन हेतु शैशव, बालपन और किशोर तीनों अवस्थाओं के अनुरूप उनके लिये बाल साहित्य का निर्माण हो। बाल-साहित्य के श्रेष्ठ रचनाकारों की रचनाओं का कलेक्शन होना चाहिए। बाल साहित्य की पुस्तकों का सचित्र होना अनिवार्य है। गाँवों और नगरों में सर्वत्र बाल पुस्तकालय हों जहाँ बाल साहित्य की पुस्तकें बच्चों को सहज सुलभ हों। इन पुस्तकालयों के लिये बाल साहित्यकारों की पुस्तकों के नियमित क्रय का प्रावधान होना चाहिये। बाल साहित्य का क्षेत्र व्यापक हो इसके लिए जरूरी समय-समय पर परिचर्चा, संगोष्ठी और सेमिनार भी हों। तभी जाकर बालक और बाल-साहित्य समृद्ध होगा। भारत के बच्चों को यदि व्यक्तिगत स्तर से लेकर राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर तक सफल बनाना है तो उन्हें सूचनात्मक साहित्य प्रदान करना होगा। यह समय की मांग है।

Principal Investigator

Mundkar

Dr. Mundkar Madhav Rajappa

Scanned by CamScanner

UNIVERSITY GRANTS COMMISSION
WESTERN REGINAL OFFICE
GANESH KHIND PUNE - 411007

PERFORMA FOR SUBMISSION OF INFORMATION AT THE TIME OF SENDING FINAL REPORT OF THE WORK DONE ON THE PROJECT

Title of the Research Project: " **Dr. Parshuram Shukla ke Suchnatmak Bal Sahitya ka Adhyayan"**

"डॉ. परशुराम शुक्ल के सूचनात्मक बाल साहित्य का अध्ययन"

1 Name & Address of Principal Investigator:

Name - **Dr. Mundkar Madhav Rajappa**

Address - **B-11 Tiwari Residency Near Swami Apartment Jawaharnagar Indira Colony Ichalkaranji. Tal. Hatkanangale Dist. Kolhapur 416115 (MS)**

2. Name & Address of the Institute

Name - **Night College of Arts and Commerce, Ichalkaranji.**

Address - **18/324, Industrial Estate, Ichalkaranji. Tal. Hatkanangale Dist. Kolhapur 416115**

3. UGC approval No. and Date: File No: **23-1123/14(WRO) Dated-24 March, 2015**

4. Date of implementation : **01 April, 2015**

5. Tenure of the Project : **Two years**

6. Total Grant Allocated : **2,70,000/-**

7. Total Grant Received : **2,10,000/-**

8. Final Expenditure : **2,21,928/-**

9. Title of the roject : -" **Dr. Parshuram Shukla ke Suchnatmak Balsahitya ka Adhyayan"**

10. Objective of the Project :
11. Whether objectives were achieved :
12. Achievements from the Project :
13. Summary of the Findings (In 500 Words) :
14. Contribution to the Society :

Separate sheet is attached.

15. Whether any Ph.D. enrolled or produced out of the project: **NIL**

16. No. Of Publication out of the Project : **Separate sheet is attached.**

Principal Investigator

Mundkar

Dr. Mundkar Madhav Rajappa

Principal

Dr. Nale P. D.
Principal,
Night College of Arts & Commerce
Ichalkaranji

Scanned by CamScanner

Uploading Certificate

CERTIFICATE

This is to certify that the Minor Research Project entitled - **Dr. Parshuram Shukla ke Suchnatmak Balsahitya ka Adhyayan" (डॉ. परशुराम शुक्ल के सूचनात्मक बालसाहित्य का अध्ययन)** awarded to **Dr. Mundkar Madhav Rajappa** has been completed and executive summary of the Minor Research Project has been uploaded on the college website, the URL link is www.nightich.ac.in .This certificate is as per the requirement under prescribed Minor Research Project guidelines.

NIGHT COLLEGE OF ARTS & COMMERCE, ICHALKARANJI ★ Estd. 1983

Dr. Nare P. D.
Principal
Night College of Arts & Commerce
Ichalkaranji.

Signature of the Principal
with Seal

Scanned by CamScanner

International Multilingual Research Journal

UGC Approved Refereed Journal

Jr.No.62759

MAH/MUL/03051/2012
ISSN-2319 9318

Vidyawarta®

Issue-19, Vol-06, July to Sept.2017

Editor
Dr.Bapu G. Gholap

www.vidyawarta.com

Scanned by CamScanner

MAH/MUL/ 03051/2012 ISSN :2319 9318

आंतरविद्याशाखीय बहुभाषिक संशोधन पत्रिका

विद्यावार्ता

TM

UGC Approved Sr.No62759

July To Sept. 2017
Issue-19, Vol-06

Editor
Dr. Bapu g. Gholap
(M.A.Mar.& Pol.Sci.,B.Ed.Ph.D.NET.)

विद्येविना मति गेली, मतीविना नीति गेली
नीतिविना गति गेली, गतिविना वित्त गेले
वित्तविना शूद्र खचले, इतके अनर्थ एका अविद्येने केले

-महात्मा ज्योतीराव फुले

❖ विद्यावार्ता या आंतरविद्याशाखीय बहूभाषिक त्रैमासिकात व्यक्त झालेल्या मतांशी मालक, प्रकाशक, मुद्रक, संपादक सहमत असतीलच असे नाही. न्यायक्षेत्र:बीड

"Printed by: **Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.** Published by **Ghodke Archana Rajendra** & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor **Dr. Gholap Bapu Ganpat.**

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205
Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295
harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com
All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

Scanned by CamScanner

Vidyawarta is UGC approved journal. It is monthly published from Beed (Maharashtra). UGC approval number of Vidyawarta is 62759 On the official website of UGC. There is a list of universities recommended and UGC approved journals. For the placement of assistant professors to the associate professor and of associate professor to the professor. API is different at every level. And for these selection grades UGC has referred some journals. It is obligatory to publish research articles and papers in UGC referred (approved) journals only. So before submitting your paper it is necessary to check the approval of UGC to that particular journal. You can check UGC approved journals on www.vidyawarta.com. In the search box of UGC website if you type the name of our journal i.e. Vidyawarta, you will get all the details of our journal. In the search box you can also type our ISSN 2319 9318 or UGC serial number 7912 and confirm.

In the upcoming issue of international journal Vidyawarta the research papers and articles are invited in English, Marathi and Hindi languages. You can send your article on any theme to us on vidyawarta@gmail.com The last date for sending the articles is 20th of every month. You will be sent one copy of Vidyawarta containing your article by registered post. Please write in detail your address with pin code.

Thanking you.....

Editor,

Dr.Bapu G.Gholap,

Harshwardhan Publication Pvt.Ltd

Beed (Maharashtra)

09850203295, 07588057695

vidyawarta@gmail.com

UGC Approved Sr.No62759

Scanned by CamScanner

26) हरिदासी सम्प्रदाय में श्रीराधा का स्वरूप
डॉ. जुगल किशोर कुजूर, जिला– सरगुजा छ०ग० || 122

27) समाजवाद का वैश्विक योगदान
डॉ० अर्चना लोहनी || 125

28) डॉ. परशुराम शुक्ल की बाल कविता में उपदेशात्मक चिंतन
प्रा. माधव आर. मुंडकर, इचलकरंजी। || 127

29) भक्ति की प्रतिष्ठा और रामचरितमानस
डॉ. ओम प्रकाश नारायण द्विवेदी, जम्मू || 129

30) राम और रामायण:पौराणिक मिथक और संरचित वास्तविकता
अनुराग कुमार पाण्डेय, वाराणसी (उ.प्र.) || 133

31) लोक जीवन और मड़ई
श्री युगेश देशमुख–डॉ. श्रीमती दुर्गा शुक्ला, दुर्ग (छ.ग.) || 139

32) शारीरिक शिक्षा के अन्तर्गत योग शिक्षा के प्रति विद्यार्थियों मे ----
डॉ. वर्षा त्रिपाठी, विदिशा || 141

33) भारत में महिला हिंसा रोकने में नारी संगठन की भूमिका
डॉ० गौरव त्रिपाठी, लालगंज, मीरजापुर (उ०प्र०) || 145

34) विधिक एवं आर्थिक योगदान का महिला सशक्तिकरण पर प्रभाव
डॉ. श्रीमती किरण तिवारी, दुर्ग छ.ग. || 148

35) आदिवासी समाज और वैश्वीकरण
कु०रेशू सिंह–डॉ० सुशील कुमार सिंह, जिला:–जौनपुर (उ०प्र०) || 151

36) भारत में नक्सलवाद: राष्ट्रीय सुरक्षा हेतु चुनौतियाँ एवं प्रत्युत्तर
डॉ० शिव पूजन, आगरा || 153

37) पुत्र–पुत्री के बीच पीसता मातृत्व
डॉ नाझीमा आर शेख, हिम्मतनगर || 155

www.vidyawarta.com/03 | http://www.printingarea.blogspot.com

Scanned by CamScanner

28

डॉ. परशुराम शुक्ल की बाल कविता में उपदेशात्मक चिंतन

प्रा. माधव आर. मुंडकर
सहा. प्राध्यापक, हिंदी विभाग,
नाईट कॉलेज ऑफ आर्टस् एण्ड कॉमर्स, इचलकरंजी।

****

प्रस्तावना:

हिंदी साहित्य विशाल तथा प्रभावी है। हिंदी साहित्य की विविध विधाओं में कुशल रचनाकारों ने अपना कौशल दिखाया हैं। इनमें प्रकृति वर्णन परक साहित्य, समाजिक विषयों पर लिखा गया साहित्य, राष्ट्रप्रेम विषयक साहित्य, धर्मज्ञान और दर्शन संबंधी साहित्य, छात्रों को प्रेरणा देनेवाला साहित्य, विज्ञान कथाएँ, सूचनात्मक साहित्य, बाल साहित्य आदि अनेक विधाएँ प्रचलित हैं, परंतु इन विविध विधाओं में से बाल साहित्य तथा सूचनात्मक साहित्य अध्ययन और अध्यापन के क्षेत्र में कुछ उपेक्षित रह गया हैं, ऐसी मेरी धारणा है।

हिंदी बाल साहित्यकारों में विविध नामों का उल्लेख हुआ हैं, उनमें सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', विष्णु प्रभाकर, नरेंद्र शर्मा, हरिवंशराय बच्चन, गुरूदेव रवींद्रनाथ टैगोर, भारतेंदु, मैथिलीशरण गुप्त, बानो सरताज, श्रीमती आशा चौरसिया, कामता प्रसाद गुरू, रोहिताश्व अस्थाना, जयमाला, बालमुकुंद अग्रवाल, डॉ. परशुराम शुक्ल आदि। हिंदी बाल कथा साहित्यकारों में डॉ. परशुराम शुक्ल का नाम विशेष उल्लेखनीय है। अँगेजी साहित्य में उपेदशात्मक बाल साहित्य प्रचुर मात्रा में मिलता है लेकिन हिंदी में इसका अभाव था। हिंदी बाल साहित्य में इस कमी को डॉ. परशुराम शुक्ल ने अनुभव किया और इस कमी को दूर करने के लिए बहुत बड़ी संख्या में वैज्ञानिक जानकारी देनेवाले बाल साहित्य का निर्माण किया। महेश सक्सेना के 'बाल साहित्यकार की कहानी उन्हीं की जुबानी' ग्रंथ में डॉ. शुक्लजी का कथन है— "इस नई सामग्री का सीधा संबंध आवश्यकता और उपयोगिता से हैं। वह आवश्यक हैं। समाज परिवर्तनशील होता है। आवश्यकता उद्देश्य और मूल्य बदलते रहते हैं। वर्तमान समय की महत्त्वपूर्ण आवश्यकता है—वैज्ञानिक दृष्टिकोन.....। आज का बालक काल्पनिक कहानियाँ और कविताएँ नहीं पढ़ना चाहता हैं।..... वह डिस्कव्हरी पर इन्हें वास्तविक रूप में देखना चाहता हैं। इनके संबंध में वैज्ञानिक जानकारी प्राप्त करना चाहता हैं, इस प्रकार की जानकारियाँ उसका बौद्धिक मनोरंजन करने में असमर्थ होती है। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए मैंने सूचनात्मक बाल साहित्य की आधारशिला रखी हैं। इसी उद्देश्य से दो विश्वकोश तथा उनके पुस्तकें तैयार की हैं और ६० खंडों में इनसाइक्लोपीडिया ऑफ एनिमल किंगडम की योजना बनाई हैं।.... मैं यह दावे के साथ कह सकता हूँ कि भविष्य का बाल साहित्य सूचनात्मक बाल साहित्य होगा।"

डॉ. परशुराम शुक्ल का परिचय:—

हिंदी बाल साहित्य के महारथी डॉ. परशुराम शुक्ल का जन्म ६ जून, १९४७ ई. को उत्तर प्रदेश के कानुपर जिले में स्थित सैबसू नामक ग्राम में एक कान्यकुब्ज ब्राह्मण परिवार में हुआ था। इनके पिता का नाम मंगली प्रसाद और माता का नाम रामश्री देवी था। माता एक धर्मपरायण महिला थी और पिताजी व्यावसायिक और जमींदार थे। डॉ. परशुराम शुक्ल अपनी संपूर्ण शिक्षा कानपुर में ग्रहण की और सन् १९७१ ई. में क्राईस्ट चर्च कॉलेज, कानपुर में समाजशास्त्र विभाग के प्रवक्ता हो गए। इसके बाद सन् १९७४ ई. में बुंदेलखंड कॉलेज, झाँसी आ गए और जून, २००९ तक आप इसी महाविद्यालय में समाजशास्त्र विभाग के विभागध्यक्ष के पद पर कार्यरत रहे।

१२ मई, १९७९ ई. को सौभाग्यवती विभा से डॉ. परशुराम शुक्ल का प्रौढ़ावस्था में विवाह हुआ। विवाह के समय उनकी आयु ३२ वर्ष की थी। इनके विवाह के संदर्भ में डॉ. प्रणोति पाटिल ने लिखा है— "डॉ. परशुराम शुक्ल दूरगामी प्रतिभा के धनी रहे है। परिवार के विषय में उन्होंने यही किया। जब उनका

Scanned by CamScanner

सेवा व्यवसाय परिपक्व हो गया और उनको स्थापित दिखा तब उन्होंने स्वयं के विवाह के बारे में सोचा। इनका विवाह सन् १९७९ में ३२ वर्ष को परिपक्व अवस्था में भोपाल निवासी डॉ. विभा शुक्ला से हुआ।" डॉ. विभा शुक्ल हिंदी की प्राध्यापक, विभागाध्यक्ष एवं प्राचार्य पद पर आसीन रह चुकी है। वर्तमान समय में वे संयुक्त संचालक (उच्च शिक्षा) के पद पर भोपाल में पदस्थ है। साथ ही विभा शुक्ला सुप्रसिद्ध लेखिका भी है। डॉ. परशुराम शुक्ल हमेशा सीमित परिवार के पक्षधर रहे है। उन्होंने अपने इसी दृष्टिकोण 'हम दो हमारे दो' को व्यावहारिक रूप दिया है। आपके दो संताने हैं—अभिनंदन और अंशु।

डॉ. परशुराम शुक्ल के व्यक्तित्व का सही मूल्यांकन उनके साहित्य से होता है। आप हिंदी बाल साहित्य के उच्चकोटि के प्रतिभावान साहित्य सर्जक है। आपने छात्र जीवन से साहित्य सृजन किया है। आप की पहली रचना 'बड़ा कौन?' बाल कहानी 'नंदन' अंक में अक्तूबर, १९८६ में प्रकाशित हुई थी। डॉ. परशुराम शुक्ल ने बाल साहित्य के क्षेत्र में बहुआयामी लेखन किया है उनमें — बालगीत, शीशुगीत, बाल कहानी, बाल उपन्यास, बाल एकांकी, बाल कविता, बाल धारावाहिक आदि विधाओं में लेखन विशेष उल्लेखनीय है। आपके बाल साहित्य के लेखन 'मोघिया लोककथाएँ' का प्रकाशन करने के लिए समाज कल्याण मंत्रालय, दिल्ली द्वारा सन् १९९० में १८००० रु का प्रकाशन अनुदान प्रदान किया गया। साथ ही भारत सरकार के पर्यावरण मंत्रालय, नई दिल्ली सहित हिंदी अकादमी—हैद्राबाद, नागरी बाल साहित्य संस्थान, बलिया, बाल कल्याण संस्थान, कानपुर द्वारा सम्मानित किया गया है।

डॉ. परशुराम शुक्ल की बाल कविता में उपदेशात्मक चिंतन:—

डॉ. शुक्ल की कविता 'शांतिदूत' शिक्षाप्रद और भावपूर्ण कविता है जो बाल मन को अधिक लुभाती है। दुनिया में मौत के साजो—सामानों में एटमबम सबसे खतरनाक है। इसके दुष्परिणाम भयावह है। बच्चों को इसके दुष्परिणामों से सचेत करते हुए कहते हैं—

"अमरीका के ये एटम बम
मानवता के हत्यारे है
रूस चीन के बमवर्षक को
भीषण विध्वसंक सारे है।"

डॉ. परशुराम शुक्ल ने बालकों के लिए इस प्रकार की बाल कविताओं की रचना की है जो जीवन के हर रंग से सरोबार है। ऐसी ही कविता सफलता के सूत्र है। जीवन में हमें किस तरह के कार्य करना है। हम सभी की सुने पर करें हम सोच समझकर—

"करना सदा भलाई सबकी
नहीं किसी से कभी लड़ाई
लेकिन यदि हो जाए कभी तो
विजय बनना निश्चित भाई।"

राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूंगा होता है हम सब देश को प्रगति की बात करते हैं पर राजनैतिक दाँवपेच के कारण भारत की कोई राष्ट्रभाषा नहीं है। हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाया जा सकता है बस आवश्यकता है राजनैतिक इच्छा शक्ति की। हिंदी भाषा किसी एक प्रांत की नहीं संपूर्ण भारत की लोकप्रिय भाषा है और भारत का विकास करने में सक्षम है—

"यह अखण्ड भारत की भाषा शान बने भारत की,
खोलेगी सब द्वार प्रगति के यह भाषा भारत की
यह उत्थान करेगी सबका, हम समझे—समझाएँ।
भारत माना की अभिलाषा हिंदी अपनाएं।"

साथही राष्ट्रभाषा के महत्त्व के संदर्भ में डॉ. परशुराम कहते हैं— प्रत्येक राष्ट्र की अपनी राष्ट्रभाषा होती है और उसका राष्ट्र विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। इजरायल और जापान जैसे छोटे—छोटे राष्ट्र की राष्ट्रभाषा है किन्तु हमारा दुर्भाग्य यह है कि हमारे देश की कोई राष्ट्रभाषा नहीं है। यदि हम सब भारतीय अपने भेदभाव को भूलकर हिंदी को राष्ट्रभाषा मान ले तो भारत भी बड़ी तेजी से प्रगति कर सकता है। इस संदर्भ में वे लिखते हैं—

"आज बढ़ रहे रूस, चीन सब,
अपनी—अपनी भाषा बल पर
हम भी हिंदी को अपना लें,
भेद—भाव सब दूर भगाकर।
भारत का हो मस्तक ऊँचा,

Scanned by CamScanner

यही एक अभिलाषा है।
हम बच्चे हैं भारत माँ के,
हिन्दी भारत की भाषा है।"

पुस्तकें ज्ञान का भण्डार होती है। अत: इनके प्रति बच्चों को लगाव होना चाहिए। पुस्तकों का अध्ययन करने से हम विवेकवान बनते हैं एवं हमारे भीतर निर्णय लेने की भावना विकसित होती है। पुस्तकों से अच्छा–बुरा समझने की क्षमता का विकास होता है। इसको डॉ. परशुराम शुक्ल ने 'उठो सवेरे' कवितासंग्रह में कहा है–

"करो पुस्तकों का सम्मान, इनमें भरा हुआ है ज्ञान।
इनको पढ़कर बन सकते हो,
बच्चों तुम अच्छे इन्सान।"

इसके साथ ही 'आओ बच्चो गाओ बच्चो' काव्यकृति में पुस्तके ज्ञान का भण्डार होती है में एकांत के साथी होते हैं और मार्गदर्शक भी होते हैं–

"पुस्तक पढ़कर बन सकते हो युग निर्माता शिक्षक,
कर्तव्यों का बोध कराती अधिकारों का ज्ञान।
पुस्तक पढ़ने से मिलते हैं, बड़े–बड़े सम्मान।"

इस प्रकार डॉ. परशुराम शुक्ल मूलत: एक समाजशास्त्री और विज्ञान के लेखक है। उन्होंने बच्चों को सूचनाएँ और उपदेश देनेवाली बाल कविताएँ, बाल कहानियाँ तथा बालोपयोगी लेख लिखे हैं। इसलिए उन्हें सूचनात्मक बाल साहित्य का जनक माना जाता है। मीडिया के विविध माध्यमों में डॉ. शुक्लजी की साहित्यिक गतिविधियों की चर्चा होती हैं। उनकी साहित्यिक रचनाओं में सूचनात्मक बाल साहित्य पर अध्ययन करना अपेक्षित है।

संदर्भ सूची:–

१. समकालीन हिंदी बाल कविता, राजेंद्रकुमार शर्मा
२. स्वातंत्र्योत्तर हिंदी बाल कतिवा में युगबोध–डॉ. उमा सरौनिया
३. समकालीन हिंदी बाल कविता, राजेंद्रकुमार शर्मा, पृ.११८
४. वही, पृ.१२० ५. वही, पृ.१०९
६. वही, पृ.५३ ७. वही, पृ.५७
८. वही, पृ.८५

❑❑❑

29

भक्ति की प्रतिष्ठा और रामचरितमानस

डॉ. ओम प्रकाश नारायण द्विवेदी,
एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी–विभाग
जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू

तुलसीकालीन भारत में कलिकाल ने सभी धर्मों को ग्रस लिया था, जब योग एवं वैराग्य पलायन कर रहे थे। धर्म पाखण्डियों के नाना मार्गों में बंट गया था, उसका वास्तविक रूप तिरोहित हो रहा था, आचार–विचार का हरण हो चुका था, वर्णाश्रम धर्म एवं लोक वेद की मर्यादा नष्ट होती जा रही थी, गोंड, गवांर राजा थे और यवन म्लेच्छादि बादषाह कठोर दण्डनीति अपना रहे थे, देवालयों, तीर्थों और पवित्र नगरियों में भ्रष्टाचार फैला हुआ था, राज–समाज षडयन्त्रकारी एवं छली था, दु:ख–दोष एवं दरिद्र बढ़ते जा रहे थे, वेद, पुराणोक्त धर्म–मार्ग को छोड़कर करोड़ों कुपन्थ बनते जा रहे थे, शान्ति और सत्य के स्थान पर दुराचार और छल–कपट बढ़ते जा रहे थे, साधु कष्ट पा रहे थे और साधुता चिन्तातुर थी, दुष्ट भोग–विलास कर रहे थे, और दुष्टता चैन की वंषी बजा रही थी, परमार्थ स्वार्थ में बदल गया था और साधन विफल होने लगे थे, कामधेनु रूपी भारतीय समाज बसुधा कसाई के हाथ पड़ गई थी और राज–समाज की नई–नई कुचालें राजनीतिक और सामाजिक वातावरण में घुटन पैदा कर रही थीं, कर्म और उपासना कुवासना में परिणत हो रहे थे, ज्ञान–वैराग्य का हरण हो रहा था, चतुर्वेद एवं षट्दर्शनों के अध्ययन का कोई अवसर नहीं था, व्रत–तीर्थ एवं तप आदि में शारीरिक कष्ट के अतिरिक्त वहां पहुंचना भी कठिन था क्योंकि राजशक्ति का प्रकोप था और

Scanned by CamScanner

UGC Approved Journal list_ View Details_
https://goo.gl/FC52UM

Clarification

Respected Authors & sensitive Readers

kindly we have to inform you that we have published research journal named VIDYAWARTA whose ISSN No is 2319 9318 but in the UGC website the vidhyawartha which is incorrect. (ugc listed Journal no. 62759) we have mentioned correct spelling Vidyawarta as allotted from respected Government authority. We are already sending request to UGC about correction the name. We are Kindly request you to please find our Journal by ISSN 2319 9318.

The Journal named Vidyawarta is being published in India only by us. Because we got Registered Trademark by Intellectual Property Department of india. Our Trademark authority certificate is available at Government website.

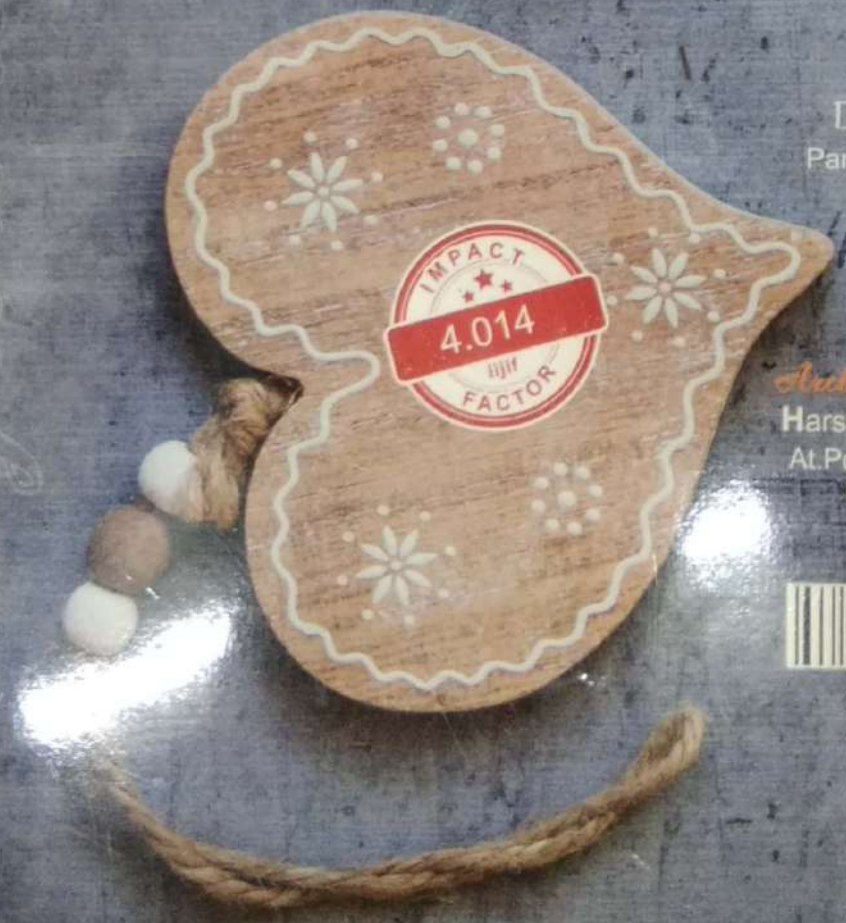

Edit By
Dr. Gholap Bapu Ganpat
Parli Vaijnath, Dist.Beed 431 515
(Maharashtra, India)
Cell : +91 75 88 05 76 95

Publisher & Owner
Archana Rajendra Ghodke
Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
At.Post.Limbaganesh, Tq.Dist.Beed
Pin-431126 (Maharashtra)

ISSN-2319 9318

₹ 300/-

Scanned by CamScanner

Aarhat Publication & Aarhat Journal's

ELECTRONIC INTERNATIONAL INTERDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL (EIIRJ)

Peer Reviewed Interdisciplinary Research Journal

ISSN- 2277-8721

Online and Print Journal

Impact Factor: 5.20 (EduIndex)

UGC Approved Journal No - 48833

10th March, 2018

Vol VII Issues No IX

Chief Editor

Ubale Amol Baban

Guest Editor

Prin. Dr. Purandhar Dhanpal Nare

Scanned by CamScanner

18	शिक्षण आणि भारतीय स्त्रिया : वर्तमानकालीन स्थिती एक दृष्टीक्षेप	एस .एस .खेडेकर	77
19	हिंदी और मराठी नाटको में प्रतिबिंबित आंबेडकरवादी चेतना	डॉ भानुदास आगेडकर	81
20	नागार्जुन के काव्य मी जनवादी चेतना	डॉ भास्कर भवर	88
21	हिन्दी की स्त्री लेखिकाएँ : इतिहास की रेखाओं में	डॉ. साईनाथ विट्ठल चपले	91
22	कहानीकार कमलेश्वर : एक मूल्यांकन	डॉ .मोहन सावंत	98
23	नाटककार : जगदीशचंद्र माथुर	प्रा.रगडे पी.आर	103
24	भूमंडलीकरण और हिंदी भाषा	प्रा .शिवाजी चवरे	109
25	हिंदी साहित्य में संत कबीर की प्रासंगिकता	विकास विधाते	112
26	हिंदी भाषा और साहित्य के संदर्भ में	संजय पाटिल	116
27	कोल्हापुर संस्थानातील छत्रपती शाहू काळातील मल्लविद्या व इतर खेळांचा अभ्यास (सन १९८४ -१९२२) - एक चीकिस्तक अभ्यास	प्रा.वाय.ए .आवळे	122
28	प्रबळ विरोधी पक्षाची गरज	प्रवीण पोवार	125
29	१६ ते २० वयोगटातील कब्बडी खेळाडूच्या शारीरिक क्षमतेच्या घटकांचा अभ्यास	विशाल पाटील	128
30	इचलकरंजी संस्थानच्या शैक्षणिक विकासामध्ये श्रीमंत ना.बा.घोरपडे यांचे योगदान	डॉ .सपकाळ रामेश्वर	131
31	सामाजिक वंचितता व समावेशान या संकल्पनांचा भारतीय संदर्भातील अभ्यास	डॉ .किशोर खिलारे	135
32	ग्रंथालयातील वाचन साहित्याचे नवे स्त्रोत :ई स्त्रोत (प्रकाशने)	नलवडे सुनंदा	139
33	भारतीय खेळाचा इतिहास व विकास	यमगेकर व्ही.एस	146
34	"फाईव्ह तिबेटीयन राईटची माहिती व फायदे "	रतन नाईकनवरे	150
35	वर्तमान शिक्षा प्रणाली : दशा और दिशा	डॉ.खंदारे चंदू	154
36	डॉ परशुराम शुक्ल के सूचनात्मक बाल साहित्य का मूल्यांकन	डॉ. एम.आर.मुडकर	156

Scanned by CamScanner

डॉ. परशुराम शुक्ल के सूचनात्मक बाल साहित्य का मूल्यांकन

प्रा. डॉ. एम. आर. मुंडकर
सहा.प्राध्यापक एवं हिंदी विभाग प्रमुख,
नाईट कॉलेज ऑफ आर्टस् एण्ड कॉमर्स,इचलकरंजी।
मो.नं. 8888198884
Email : madhav.mundkar@gmail.com

प्रस्तावना :–

प्राचीन काल से लेकर वर्तमान युग तक हिंदी बाल साहित्य सृजन की धारा अखंड प्रवाहित रही है। पंचतंत्र की कहानियों को बाल साहित्य सृजन की नींव माना जाता है। लेकिन आधुनिक युग से ही बाल–साहित्य के सही विकास को समझा जा सकता है। भारतेंदु से शुरू हुई हिंदी बाल–साहित्य की विकास यात्रा वर्तमान समय में उत्कर्ष की ओर पहुँची है। सन् 1990 के बाद कुछ सृजनधर्मी बाल साहित्यकारों ने बाल–साहित्य में प्रयोग किए। इन प्रयोगों से ही हिंदी बाल साहित्य में सूचनात्मक बाल साहित्य की परिपाटी शुरू हुई। इसके सूत्रधार के रूप में डॉ. परशुराम शुक्ल का नाम विशेष उल्लेखनीय माना जाता है। डॉ. शुक्ल ने 150 से अधिक पुस्तकें और लगभग 6000 स्फुट रचनाएँ लिखी हैं। अत: प्रस्तुत पर आलेख में डॉ. शुक्ल के सूचनात्मक बाल साहित्य का मूल्यांकन करने का प्रयास रहा है।

बौद्धिकता की दृष्टि से मूल्यांकन :–

बौद्धिकता का संबंध हमारे मन एवं बुद्धि से होता है। मनुष्य सामाजिक प्राणी है और समाज में रहने के नाते उसे सामाजिक परिवेश का ज्ञान होना जरूरी होता है। मनुष्य जीवन के सामाजिक क्रिया–कलापों की शुरुआत बाल्यावस्था से होती है। बच्चा अपनी बौद्धिकता को जरिए अपने परिवेश को जानने–समझने की क्रिया करता रहता है। उसके जीवन में माता–पिता के बाद शिक्षक और ग्रंथ ही उसकी बौद्धिकता या समझ को बढ़ाने में मदद करते हैं। बच्चा अपनी आयु की पाँच साल तक घर–परिवेश और परिवार के सदस्यों के जरिए परिवेश को समझने की कोशिश करता है। पाँच साल के बाद वह स्कूल से अपने सामाजिक जीवन में प्रवेश करता है। यहाँ से उसके समझ में वृद्धि होती जाती है। उसके बाल सुलभ कौतुहल और जिज्ञासाओं का प्रारंभ यहाँ से शुरू होता है। इसकी पूर्ति के लिए बाल साहित्य का जन्म हुआ है।

साहित्य का बच्चों की बौद्धिकाता पर प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष रूप में प्रभाव पड़ता है। ''व्यक्ति जब बच्चे के रूप में इस धरती पर जन्म लेता है तो उसका शरीर और मस्तिष्क अत्यंत कोमल, अविकसित, किंतु कुछ विलक्षण गुणों और विशेषताओं से युक्त होता है। इन्हीं विलक्षण गुणों और विशेषताओं की सहायता से वह समाज में अनेक प्रकार की सहायता से वह समाज में अनेक प्रकार की क्रियाएँ, प्रतिक्रियाएँ करता है एवं परिस्थितियों के अनुकूलन करना सीखता है। इस प्रकार बच्चे के विकास का आरंभ हो जाता है, अपने विकास की

Scanned by CamScanner

प्रक्रिया के मध्य उसमें अनेक प्रकार की योग्यताओं, कुशलताओं, चरित्र निर्माण, आदतों, रूचियों, मनोवृत्तियों आदि का जन्म होता है। ये उसके जीवन के बाह्य और आंतरिक पक्ष पर प्रभाव डालते हैं। ये सभी गुण गतिशील होते हैं। अतः हम यह कह सकते हैं कि व्यक्तित्व, व्यक्ति का सम्पूर्ण शारीरिक, मानसिक संगठन है, जो उसके विकास की प्रत्येक अवस्था में बना रहता है।''[1] अतः स्पष्ट है कि साहित्य बच्चों मे समझ का या बौद्धिकता स्तर बढ़ाता है। इस दृष्टि से सूचनात्मक साहित्य अपना विशेष महत्त्व रखता है।

डॉ. परशुराम शुक्ल ने का सूचनात्मक साहित्य बच्चों में बौद्धिकता का स्तर बढ़ाने में विशेष महत्त्वपूर्ण रहा है। उन्होंने बच्चों में वैज्ञानिक दृष्टि का विकास करने की दृष्टि से अनगिनत किताबें लिखी है। प्राचीन बाल साहित्य कोरी कल्पना एवं परम्परावादी होने के कारण बच्चे भ्रामक कल्पनाओं में फँस जाते हैं। लेकिन सूचनात्मक साहित्य भावना नहीं बुद्धि को महत्त्वपूर्ण मानता है। इसमें यथार्थ तथ्यों पर आधारित सामग्री इकट्ठी करने के कारण बच्चे की संबंधित विषय को लेकर बौद्धिकता में वृद्धि होती है। उन्होंने विज्ञान, प्राकृतिक पर्यावरण, शिक्षा, राष्ट्रीय आदर्श, सूचनात्मक कोश आदि के जरिए बच्चों की बौद्धिकता (समझ) को बढाने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। हम प्रत्येक क्षेत्र के एक उदाहरण से उनके सूचनात्मक साहित्य के बौद्धिकता की दृष्टि से मूल्यांकन को समजते हैं।

वर्तमान समय विज्ञान एवं तकनीक का युग है। हमारे पूर्वजों के लिए जो बाते रहस्य थी वे बाते आज विज्ञान की मदद से साक्षात हुई है। विज्ञान के नए–नए आविष्कारों ने मनुष्य का जीवन सुखद बना गया है। विज्ञान के पास तथ्यपरक दृष्टि होने के कारण वह हर विषय के पीछे के कार्य–कारण–भाव को स्पष्ट करता है। आज की पीढ़ी 'स्मार्ट' होने के कारण वह घंटों कम्प्यूटर के स्क्रीन के आगे बैठकर दुनियाभर के रहस्यों एवं विषयों को तलाशने की कोशिश कर रही है। इस कारण वैज्ञानिक दृष्टि से डॉ. परशुराम शुक्ल का सूचनात्मक साहित्य बहुत ही मूल्यवान साबित होता है। उन्होंने विज्ञान के साधन, प्राकृतिक संसाधन, पशु–पक्षी, पेड़–पौधे आदि पर विस्तार से साहित्य का निर्माण किया है। रोबोट, कम्प्यूटर, टेलीविजन, रॉकेट आदि आधुनिक तकनीक एवं विज्ञान के संसाधनों पर कविताएँ लिखकर बच्चों की वैज्ञानिक बौद्धिकता को बढाने का काम किया है।

डॉ. परशुराम शुक्ल ने बालकों के बौद्धिक विकास के लिए विज्ञान को जरूरी माना है। विज्ञान वर्तमान जीवन का अभिन्न अंग होने के कारण वे मानते हैं कि बच्चों विज्ञान की जानकारी देना बेहद जरूरी है। वे अपनी 'बाल सतसई' में विज्ञान एवं उनके साधनों का परिचय इस प्रकार देते हैं–

''मानव हित विज्ञान ने, किए बहुत से काम।
फ्रिज, ए.सी, कूलर सभी देते हैं आराम।
मेल एक्सप्रेस गाड़ियाँ, करें सफर आसान।
यूरोप तक पहुँचा रहे, कुछ घंटों में यान।

Scanned by CamScanner

घर के भीतर देखिए, टी.वी करे कमाल।
मन रंजन के साथ में, सारे जग का हाल।
बच्चों के संग खेलते, बिना किए आराम।
मानव से बढकर करें रोबो सारे काम।''[2]

स्पष्ट है कि 'बाल–सतसई' के इन दोहों से बच्चों को फ्रिज, कुलर, टी.वी, एक्स्प्रेस रेल गाड़ी, रोबोट आदि वैज्ञानिक आविष्कारों की जानकारी दी है। जो बच्चों की वैज्ञानिक बौद्धिकता को बढाती है।

प्राकृतिक दृष्टि से भी बच्चों की बौद्धिकता बढाने में डॉ. शुक्ल ने विशेष ध्यान दिया है। बच्चों को अपने पर्यावरण एवं परिवेश से परिचित कराना उनके प्राकृतिक दृष्टि से लिखे गए सूचनात्मक साहित्य का प्रमुख उद्देश्य रहा है। उनका अधिकांश साहित्य प्राकृतिक पर्यावरण की सूचनाएँ स्पष्ट करता है। इसमें उन्होंने स्थानीय स्तर से लेकर वैश्वीक स्तर तक प्राकृतिक जीवन को सूचनात्मक बाल साहित्य का आधार बनाया है। इसमें पशु–पंछी, पेड़ पौधें, विभिन्न राज्यों के प्राकृतिक प्रतीक, समुद्री जीव आदि पर विस्तार से लिखा है जिससे बच्चों की पर्यावरण को लेकर समझ में वृद्धि होती है। उन्होंने पर्यावरण के हरेक संसाधनों के स्वरूप एवं उनके प्रकारों का भी सुबोध विवेचन किया है। उनके 'हमारे प्राकृतिक प्रतीक' ग्रंथ का उदाहरण दृष्टव्य है–

''राष्ट्रीय प्रतीकों के समान भारत सरकार ने चार राष्ट्रीय प्राकृतिक प्रतीक भी घोषित किए हैं। ये हैं–बाघ, मोर, बरगद और कमल। बाघ भारत का राष्ट्रीय पशु, मोर भारत का राष्ट्रीय पक्षी, बरगद भारत का राष्टीय वृक्ष और कमल भारत का राष्ट्रीय पुष्प है। इनके विषय में बहुत से लोगों को जानकारी है। किंतु यह बहुत कम लोग जानते हैं कि भारत के अधिकांश राज्यों ने अपने–अपने राज्य पशु, राज्य पक्षी, राज्य वृक्ष और राज्य पुष्प घोषित किए हैं।''[3] स्पष्ट है कि यहाँ बच्चों को भारत के प्राकृतिक प्रतीकों के संदर्भ में समझ मिलती है। बालक इन प्रतीकों को विस्तार से जानने की कोशिश करते हैं और उनकी बौद्धिका में वृद्धि होती है।

डॉ. परशुराम शुक्ल का सूचनात्मक बाल साहित्य शिक्षाप्रद हैं। उसमें हर एक क्षेत्र की अद्यतन जानकारियाँ मिलती हैं। उनके सूचनात्मक साहित्य से बच्चों को जीवन व्यवहार, राष्ट्रीय आदर्श, देश प्रेम, जीवन मूल्य, जीवन में ज्ञान का महत्त्व आदि के बार में शिक्षा मिलती है। उनकी कई कविताओं में बालकों को अच्छा नागरिक बनने के लिए जरूरी मूल्यों की शिक्षा मिलती है। बच्चों के व्यक्तित्व का संतुलित विकास होने के लिए पढ़ाई करना जरूरी है। शिक्षा से ही उनमें समाज तथा देश के प्रति अपने दायित्व की भावना का विकास होता है। जैसे डॉ. शुक्ल ने अपनी कविता 'हे ईश्वर' में ज्ञान महत्त्व समझाते हैं–

''अज्ञान अंधेरा दूर करो।
जन–जन में नव चेतना भरो।
पढ़–लिखकर हम बने महान।

Scanned by CamScanner

हे ईश्वर! दो यह वरदान।
पर सेवा पर उपकार करे।
दीनों–दुःखियों के कष्ट हरें।
बने गुणों की अनुपम खान।
हे ईश्वर! दो यह वरदान।
मातृभूमि से प्रेम करें सब।
मातृभूमि पर हो बलिदान।
हे ईश्वर! दो यह वरदान।''[4]

स्पष्ट है कि इस कविता में डॉ. शुक्ल ने शिक्षा के महत्त्व के साथ बच्चों में सामाजिक सरोकार की भावना को स्पष्ट किया है। बालक इस कविता से ज्ञान का महत्त्व, समाज सेवा, देश प्रेम आदि मूल्यों को समझता है।

ज्ञान–विज्ञान की दृष्टि से मूल्यांकन :–

सूचनात्मक बाल साहित्य का प्रमुख आधार ज्ञान–विज्ञान रहा है। सूचनात्मक साहित्य को विज्ञान साहित्य के नाम से भी जाना जाता है। विज्ञान में कार्य–कारण भाव को महत्त्वपूर्ण माना जाता है। सूचनात्मक बाल साहित्य लिखते समय साहित्यकार को संबंधित विषय की वास्तविकता के धरातल पर गहरी छान–बिन करनी पड़ती है। साहित्यकार एक विषय की तलाश में उस विषय से जुड़े अन्य पहलुओं से परिचित होता है। जिससे ज्ञान–विज्ञान की दृष्टि में वृद्धि होती है। डॉ. शुक्ल ने ज्ञान–विज्ञान के क्षेत्र से जुड़े अनगिनत विषय पर सूचनात्मक साहित्य लिखा है। उन्होंने फ्रिज, टेलीफोन, टेलीविजन, रोबो, बिजली, पंखा, रेलगाड़ियाँ, कम्प्यूटर, रेडियो, इंजिन, रॉकेट आदि वैज्ञानिक संसाधनों पर कविताएँ लिखी है।

टेलीफोन के आविष्कार को सुबोध शब्दों में समझाते हुए डॉ. शुक्ल ने लिखा हैं –

''आओ बच्चों हम सब मिलकर,
ग्राहम बेल को जाने।
जिसने टेलीफोन बनाया,
उसे आज पहचानें।
ग्राहम बेल ने सबसे पहला
टेलीफोन बनाया।
हलो हलो कह कर संदेशा,
घर–घर में पहुँचाया।
आज हमारे मम्मी–पापा,
जहाँ कहीं भी जाते।
करके टेलीफोन हमेशा,
संदेशा पहुँचाते।''[5]

Scanned by CamScanner

स्पष्ट है आज के बच्चें मोबाइल को जानत–समझते हैं लेकिन इसके पूर्व टेलीफोन का आविष्कार हुआ था। उक्त कविता से उन्हें टेलिफोन का आविष्कार, उसके जनक एवं उसके महत्त्व के बार में वैज्ञानिक जानकारी मिलती है।

आज दुनियाभर में मानव यंत्र अर्थात रोबोट के बार में चर्चा हो रही हैं। आज अनेक औद्योगिक इकाईयों और घरों में भी काम करने के लिए रोबोट का परिचालन किया जा रहा है। डॉ. परशुराम शुक्ल ने भी सूचनात्मक साहित्य में रोबोट को विषय बनाया है। उनकी रोबोट अर्थात मानव यंत्र पर बनी 'मेरा रोबो बड़ा निराला' कविता का उदाहरण यहाँ दृष्टव्य है–

''मेरा रोबो बड़ा निराला।
मैमोरी वाल सिम डाला।
काम सभी करता पल भर में,
करता कोई नहीं घुटाला।
घर की साफ–सफाई करता,
साफ करे कोने का जाला।''[6]

स्पष्ट है उपरोक्त कविता के जरिए बच्चों को रोबो इस मानव यंत्र की वैज्ञानिक संरचना और उसके कामों की जानकारी मिलती है। बच्चों की रोबो के संदर्भ में वैज्ञानिक दृष्टि में निखार आता है। आज का युग संगणक का युग है। बच्चे मोबाइल, इंटरनेट के जरिए हमेशा अपडेट रहते हैं। इस कारण संगणक अब उनके जीवन का अभिन्न अंग बना हुआ है। डॉ. शुक्ल ने कम्प्यूटर की वैज्ञानिक जानकारी देने हेतु 'कम्प्यूटर जी' कविता लिखी है–

''कम्प्यूटर जी आ जाओ।
होमवर्क निपटा जाओ।
काम बहुत भारी है।
मेरी कुछ लाचारी है।
तुम तो माऊसवाले हो।
सचमुच बड़े निराले हो।
लाखों जोड़ घटाते हो।
बिगड़ा काम बनाते हो
तुम तो अंतर्यामी हो।
हम बच्चों के स्वामी हो।
पास हमारे आ जाओ।
बेड़ा पार लगा जाओ।''[7]

उक्त कविता से बच्चों की वैज्ञानिक समझ बढती है। वे समझ जाते हैं कि कम्प्यूटर की मदद से अंक गणित के काम आसानी से किए जा सकते हैं। साथ ही उन्हें कम्प्यूटर के अन्य उपकरण जैसे माउस की जानकारी मिलती है। बच्चे अपने रोजाना होमवर्क

Scanned by CamScanner

में कम्प्यूटर की मदद किस प्रकार लेनी चाहिए यह भी समझते हैं। अत: स्पष्ट है कि डॉ. परशुराम शुक्ल ने विज्ञान के विभिन्न आविष्कारों एवं संसाधनों पर सरल एवं सुबोध भाषा में सूचनात्मक साहित्य लिखा है। जिससे बच्चों की वैज्ञानिक चेतना का विकास होता है। उन्हें विज्ञान के यंत्र एवं उसके उपयोगों के संदर्भ में समझ आती है।

संदर्भ सूची :

1 डॉ. परशुराम शुक्ल, परिचयात्मक समाजशास्त्र, पृ. 230
2 डॉ. परशुराम शुक्ल, 'बाल सतसई', पृ. 75-76
3 डॉ. परशुराम शुक्ल, 'हमारे प्राकृतिक प्रतीक', पृ. 5
4 डॉ. परशुराम शुक्ल, 'आओ बच्चों गाओ बच्चों', पृ. 11
5 डॉ. डी. आर. राहुल, 'स्वातंत्र्योत्तर हिंदी बाल कविता में वैज्ञानिक चेतना', पृ. 126
6 डॉ. परशुराम शुक्ल, प्रतिनिधि बाल कविताएँ - 'मेरा रोबो बड़ा निराला', पृ.71
7 वही, पृ. 26

Scanned by CamScanner

Aarhat Publication & Aarhat Journal's
108,Gokuldham Park, Dr.Ambedkar Chowk, Near TV Tower, Badlapur(E).421503
Email ID:aarhatpublication@gmail.com • Ph.: 9822307164
Website : www.aarhet.com

Scanned by CamScanner